

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 16: पृथु की स्तुति

21 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



ऋषियों की प्रेरणा से, दिव्य वन्दीजन सिंहासनासीन राजा पृथु के समक्ष अपनी वाणी उठाते हैं, उनके शासन की महिमा की भविष्यवाणी करते हुए — जबकि सम्राट् अभिमान से नहीं, बल्कि विनम्रता से सुनते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

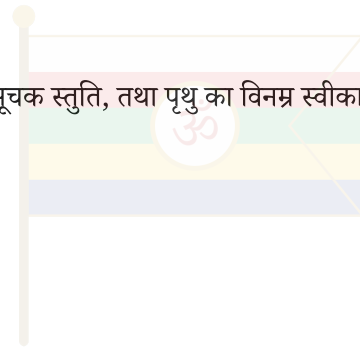
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में, राजा पृथु — भगवान् विष्णु के अंशावतार — पृथ्वी के सम्राट् अभिषिक्त हुए और देवगण द्वारा सज्जित किए गए, और जब दिव्य वन्दीजन उनकी स्तुति करने आए, तो उन्होंने विनम्रता से उनसे अपनी स्तुति सचमुच योग्य कर्मों के लिए सुरक्षित रखने को कहा। यह षोडश

अध्याय उन्हीं का गीत है। ऋषियों की प्रेरणा से, तथा आने वाली महानता को भविष्य-दृष्टि से देखते हुए, वन्दीजन अपनी वाणी उठाते हैं और पृथु की स्तुति करते हैं — धर्म के अग्रगण्य धारक के रूप में, पृथ्वी के समान सहनशील रक्षक के रूप में, संसार के कष्ट को हरने अपनी शक्ति के अंश से अवतरित स्वयं भगवान् के रूप में, और अपनी प्रजा के पिता के रूप में। उनकी स्तुति के माध्यम से एक धर्ममय शासक का सम्पूर्ण आदर्श हमारे लिए अंकित होता है; और पृथु के विनम्र श्रवण के माध्यम से, एक ऐसी आत्मा का आदर्श जो सम्मानित होकर भी ऊपर नहीं उठती। यह स्तुति का अध्याय है जो शिक्षा देती है, और महानता का जो विनम्र रहती है।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 16 (षोडश अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: वन्दीजनों द्वारा राजा पृथु की स्तुति
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में (जिसमें वन्दीजनों के वचन उद्धृत हैं)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: राजा पृथु की अभिषेक-सभा
- केन्द्रीय विषय: वन्दीजनों द्वारा राजा पृथु के गुणों तथा शासन की भविष्य-सूचक स्तुति, तथा पृथु का विनम्र स्वीकार
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 1-27
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 15 ने राजा पृथु तथा रानी अर्चि के अवतरण, उनके विष्णु के अंशावतार के रूप में पहचाने जाने, तथा दिव्य उपहारों सहित उनके सम्राट् अभिषेक की कथा कही। जब दिव्य वन्दीजन उनकी स्तुति करने आगे आए, तो पृथु ने, उल्लेखनीय विनम्रता से, उनसे अपनी स्तुति योग्य कर्मों के लिए सुरक्षित रखने को कहा। यह षोडश अध्याय वही गीत है जो उन्होंने तब अर्पित किया — ऋषियों की प्रेरणा से, जिन्होंने उन्हें सम्राट् की आने वाली महिमा की स्तुति करना सिखाया।

वन्दीजन अपना गीत आरम्भ करते हैं

ऋषियों की प्रेरणा से, वन्दीजनों ने आरम्भ किया, किन्तु पहले उन्होंने इतने महान् विषय के समक्ष अपनी असमर्थता स्वीकार की। हम असमर्थ हैं, उन्होंने कहा, आपकी महिमा का वर्णन करने में — आप जो, दिव्यों में अग्रगण्य, अपनी शक्ति से अवतरित हुए हैं; वेन के शरीर से जन्मे आपके कर्म वाणी के स्वामियों की बुद्धि को भी भ्रमित कर दें।

नालं वयं ते महिमानुवर्णने
यो देववर्योऽवततार मायया ।
वेनाङ्गजातस्य च पौरुषाणि ते
वाचस्पतीनामपि बभ्रमुर्धियः ॥ २ ॥

nālaṁ vayaṁ te mahimānuvarṇane yo deva-varyo 'vatatāra māyayā venāṅga-jātasya ca pauruṣāṇi te vācas-patīnām api babhramur dhiyaḥ

अर्थ: दिव्यों में अग्रगण्य होकर आपने अपनी अचिन्त्य शक्ति से यह रूप धारण किया है; राजा वेन के शरीर से जन्मे होते हुए भी आपके कर्म ऐसे हैं कि वाणी के महानतम स्वामी भी उनका वर्णन करते हुए अपनी वाक्पटुता का सूत्र खो बैठें। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 2)



ऋषियों की प्रेरणा से, दिव्य वन्दीजन अपना गीत आरम्भ करते हैं, यह स्वीकार करते हुए कि वाणी के स्वामी भी उस राजा की महिमा का वर्णन करने में भ्रमित हो जाएँगे जो अपनी दिव्य शक्ति से अवतरित हुआ है (श्लोक 1-3)।

फिर, आने वाले कर्मों को भविष्य-दृष्टि से देखते हुए, उन्होंने उनके शासन की महानता की भविष्यवाणी की। यह राजा, उन्होंने गाया, धर्म के धारकों में अग्रगण्य है; वह सम्पूर्ण संसार को धर्म में प्रवृत्त करेगा, पवित्र नियमों की सीमाओं की रक्षा करेगा, और उन्हें तोड़ने वालों को दण्ड देगा।

एष धर्मभृतां श्रेष्ठो लोकं धर्मेऽनुवर्तयन् ।
गोप्ता च धर्मसेतूनां शास्ता तत्परिपन्थिनाम् ॥ ४ ॥

eṣa dharma-bhṛtāṁ śreṣṭho lokaṁ dharme 'nuvartayan goptā ca dharma-setūnām śāstā tat-paripanthinām

अर्थ: धर्म के रक्षकों में अग्रगण्य, वे सम्पूर्ण संसार को धर्म के मार्ग पर स्थापित करेंगे, उसकी पवित्र सीमाओं को अखण्डित रखेंगे, तथा उन्हें तोड़ने वालों को सुधारेंगे। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 4)

वन्दीजनों की दृष्टि और आगे तक पहुँची: यह राजा, उन्होंने गाया, विभिन्न देवगणों के रूप में प्रकट होकर प्रत्येक प्राणी का पालन करेगा, वैदिक यज्ञ के माध्यम से ऊर्ध्वलोकों को धारण करेगा, तथा समय पर वर्षा से पृथ्वी का पोषण करेगा — ठीक उसी सूर्य के समान, जो समुद्र का जल लेकर वर्षा-ऋतु में उसे लौटा देता है, यह राजा भी अपनी प्रजा से उतना ही लेगा जितना उनकी आवश्यकता के समय लौटा देगा। (श्लोक 5-6)

एक रक्षक की करुणा

वन्दीजनों ने आगे उनके शासन की कोमलता का चित्र खींचा। यह राजा, उन्होंने गाया, इतना सहनशील होगा कि उन लोगों के अपराध भी धैर्य से सहेंगे जो उस पर आक्रमण करते हैं; पीड़ितों के प्रति सदा करुणामय, वह पृथ्वी के समान सहनशील तथा धारण करने वाला होगा, जो उस पर चलने वाले सबको धारण करती है।

तितिक्षत्यक्रमं वैन्य उपर्याक्रमतामपि ।

भूतानां करुणः शश्वदार्तानां क्षितिवृत्तिमान् ॥ ७ ॥

titikṣaty akramam vainya upary ākramatām api bhūtānām karuṇaḥ śaśvad ārtānām kṣiti-vṛttimān

अर्थ: वेन का पुत्र उन लोगों के अपराध भी बिना प्रतिकार के सह लेगा जो उसका अनिष्ट करते हैं; पीड़ितों के प्रति उसकी करुणा कभी डिगेगी नहीं, और पृथ्वी के समान वह उन सबका भार वहन करेगा जो उस पर निर्भर हैं। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 7)



वन्दीजन एक शासक के रूप में पृथु की कोमलता की भविष्यवाणी करते हैं — अपराधियों के प्रति धैर्यवान्, पीड़ितों के प्रति सदा करुणामय, और सबको धारण करने वाली पृथ्वी के समान सहनशील (श्लोक 5-8)।

यदि इन्द्र भी वर्षा रोक दें, तो वन्दीजनों ने भविष्यवाणी की, यह राजा — स्वयं भगवान् का अंश होने के कारण — वर्षा की पूर्ति करेगा तथा पृथ्वी को अनावृष्टि से बचाएगा, ठीक वैसे ही जैसे स्वयं भगवान् ने एक दिन गोवर्धन पर्वत उठाकर वृन्दावन के गोपों को इन्द्र की बाढ़ से बचाया था। (श्लोक 8)

उन्होंने यह भी गाया गुणों की एक सम्पूर्ण सूची: चन्द्रमा-सम मुख जो देखने वालों को शान्ति देता है, नीतियाँ उतनी ही अगम्य जितना वरुण को छिपाने वाला सागर, शत्रुओं के लिए अग्नि के समान दुष्प्राप्य निकटता, वायु के समान निष्पक्ष दृष्टि जो सबको स्पर्श करे किन्तु किसी से बँधे नहीं, ऐसा समदर्शी न्याय कि वह अपने ही दोषी पुत्र को दण्ड देगा किन्तु शत्रु के निर्दोष पुत्र को क्षमा करेगा, तथा उसका शासन आर्कटिक की सीमा तक निरापद सूर्य-प्रकाश के समान फैलेगा — अपनी सम्पूर्ण प्रजा को इतना प्रसन्न करते हुए कि वे सहर्ष उसे अपना स्वामी स्वीकार करेंगे। (श्लोक 9-15)

फिर भी इन राजोचित गुणों के नीचे, वन्दीजनों ने गाया, एक गहरा चरित्र निहित था: सत्य में दृढ़, वह ब्राह्मण-संस्कृति का सम्मान करेगा, वृद्ध तथा ज्ञानवृद्धों की सेवा करेगा, और उसकी शरण में आए प्रत्येक व्यक्ति को आश्रय देगा।

मातृभक्तिः परस्त्रीषु पत्न्यामर्ध इवात्मनः ।

प्रजासु पितृवत्स्निग्धः किङ्करो ब्रह्मवादिनाम् ॥ १७ ॥

mātṛ-bhaktiḥ para-striṣu patnyām ardha ivātmanaḥ prajāsu pitṛvat snigdhaḥ kiṅkaro brahma-vādinām

अर्थ: अपनी पत्नी के अतिरिक्त प्रत्येक स्त्री को माता के समान मानते हुए, अपनी पत्नी को अपने ही शरीर का आधा भाग मानते हुए, अपनी प्रजा को वैसे ही प्रेम करते हुए जैसे पिता अपने बच्चों को करता है, वह राजा होते हुए भी स्वयं को भगवान् की महिमा गाने वालों का समर्पित सेवक मानेगा। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 17)

और वह प्रत्येक देहधारी प्राणी को अपने ही समान प्रिय मानेगा, अपने मित्रों को आनन्दित करेगा, मुक्त आत्माओं की संगति करेगा, तथा अधर्मियों के लिए एक दृढ़ दण्डदाता के रूप में खड़ा रहेगा। (श्लोक 16, 18)

उनमें अवतरित भगवान्

और ऊँचे उठते हुए, वन्दीजनों ने प्रकट किया कि पृथु कौन थे, इसका गहनतम सत्य। यह राजा, उन्होंने गाया, वस्तुतः स्वयं भगवान् हैं — तीनों लोकों के स्वामी, अपरिवर्तनीय आत्मा, संसार में अपनी शक्ति के अंश से अवतरित; और उनकी उपस्थिति के प्रकाश में, अविद्या द्वारा बुनी विविधता उस रिक्त वस्तु के रूप में दिखती है जो वह है।

अयं तु साक्षाद्भगवांस्त्र्यधीशः

कूटस्थ आत्मा कलयावतीर्णः ।

यस्मिन्नविद्यारचितं निरर्थकं

पश्यन्ति नानात्वमपि प्रतीतम् ॥ १९ ॥

ayaṁ tu sākṣād bhagavāṁs try-adhīśaḥ kūṇa-stha ātmā kalayāvatīrṇaḥ yasminn avidyā-racitaṁ nirarthakaṁ paśyanti nānātvam api pratītam

अर्थ: यह राजा वस्तुतः स्वयं भगवान् हैं, तीनों लोकों के स्वामी, अपरिवर्तनीय आत्मा, अपनी शक्ति के अंश से अवतरित; जिनके प्रकाश में अविद्या द्वारा रची विविधता अर्थहीन दिखती है। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 19)

इस स्तुति का गहरा कारण यही है: ऐसी मुक्त आत्मा सिंहासन पर बैठकर भी कभी नहीं भूलती कि वह केवल एक भगवान् की नित्य सेवक है, और इसीलिए जन्म, देह तथा स्वामित्व के वे भ्रम, जो साधारण आत्माओं को “मेरा” और “तेरा” पर झगड़ाते हैं, उसे बाँध नहीं पाते। पृथु ने न तो शासन करना छोड़ा, न ही अपने प्रति दिए गए सम्मान को ग्रहण करना; बल्कि शासन करते हुए तथा सम्मानित होते हुए भी, वह अपने वास्तविक स्वरूप के ज्ञान में स्थिर रहा। यही, वन्दीजन संकेत करते हैं, वह रहस्य है जो भगवान् की शक्ति के प्रत्येक अवतरण में निहित है: अधिकार उसे भ्रष्ट नहीं करता जो कभी नहीं भूलता कि वह केवल भगवान् की ही व्यवस्था का निर्वहन कर रहा है।



वन्दीजन गहनतम सत्य प्रकट करते हैं: कि राजा पृथु स्वयं भगवान् हैं, तीनों लोकों के स्वामी, पृथ्वी की रक्षा के लिए अपनी शक्ति के अंश से अवतरित (श्लोक 18-20)।

उनके शासन की महिमा

अपने विजयी रथ पर पृथ्वी भर में अद्वितीय रूप से विचरण करते हुए, अपनी निर्बाध कक्षा में सूर्य के समान देदीप्यमान, तथा राजाओं और देवताओं द्वारा भी सम्मानित, जिनकी रानियाँ उसकी स्तुति ऐसे गाएँगी मानो वह स्वयं भगवान् विष्णु के ही चिह्न धारण किए हो, यह राजा — वन्दीजनों ने भविष्यवाणी की — समय आने पर दो दूरगामी महत्त्व की घटनाएँ घटित करेगा: सरस्वती नदी के उद्गम-स्थल पर वह सौ महान् अश्वमेध यज्ञ करेगा, और उनमें से अन्तिम में स्वयं इन्द्र, उसकी महिमा को सहन न कर पाने के कारण, यज्ञ के घोड़े को चुरा ले जाएगा; तथा अपने ही राजमहल के उद्यान में उसे सनत्कुमार से भेंट करने का सौभाग्य मिलेगा, जो चारों नित्य-युवा ऋषियों में से एक हैं, और वह उनकी इतनी भक्ति से पूजा करेगा कि उसे वही उपदेश प्राप्त होगा जिससे आत्मा दिव्य आनन्द का स्वाद पाती है। (श्लोक 20-25)

अन्ततः उन्होंने उनके आने वाले शासन की पूर्णता गाई। अपने अप्रतिरोध्य रथ से समस्त दिशाओं को जीतते हुए, अपनी शक्ति से संसार के कष्टों को उखाड़ते हुए, और देवों तथा असुरों दोनों के स्वामियों द्वारा स्तुत, यह महात्मा पृथ्वी का सच्चा स्वामी बनेगा, जिसके अधीन व्यवस्था, समृद्धि, तथा धर्म फले-फूलेंगे।

दिशो विजित्याप्रतिरुद्धचक्रः

स्वतेजसोत्पाटितलोकशल्यः ।

सुरासुरेन्द्रैरुपगीयमान-

महानुभावो भविता पतिर्भुवः ॥ २७ ॥

diśo vijityāpratiruddha-cakraḥ sva-tejasotpāṭita-loka-śalyaḥ surāsurendrair upagīyamāna-mahānubhāvo bhavitā patir bhuvaḥ

अर्थ: अपने अजेय रथ पर सभी दिशाओं पर विजय पाकर, अपने ही तेज से संसार के कष्टों को समूल उखाड़कर, तथा देवताओं व असुरों दोनों के अधिपतियों द्वारा गाया जाकर, यह महाप्राण पृथ्वी का अधिपति बनेगा। (स्कन्ध 4, अध्याय 16, श्लोक 27)



इस समस्त स्तुति के बीच सम्राट् पृथु विनम्रता से सुनते हैं, अभिमान लेने के बजाय वन्दीजनों का सम्मान करते हुए, जबकि सभा उस शासन की आशा में देखती है जिसकी गीत भविष्यवाणी करता है (श्लोक 21-27)।

इस समस्त उठती स्तुति के बीच, पृथु ने अभिमान से नहीं बल्कि विनम्रता से सुना, वन्दीजनों को उनकी भक्ति के लिए सम्मान देते हुए, उनके वचनों में गर्व करने के बजाय; और सम्पूर्ण सभा, उनके शासन के दर्शन को सुनकर, उस धर्म-युग की आशा में देखने लगी जो वह लाएगा। इस प्रकार षोडश अध्याय समाप्त होता है — गीत में अंकित एक शासक के आदर्श के साथ, और उस सम्राट् के साथ जो उसे साकार करता है, अपनी ही स्तुति के नीचे विनम्र खड़ा।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्ची स्तुति एक ऐसा आदर्श वर्णन करती है जिस पर खरा उतरना है। वन्दीजन पृथु की चापलूसी नहीं करते; वे उनके समक्ष वे ही गुण रखते हैं जो एक शासक में होने चाहिए। सही रूप से अर्पित, स्तुति रिक्त तालियाँ नहीं बल्कि महानता का आह्वान है (श्लोक 4-8)।
2. रक्षक का लक्षण सहनशीलता है। पृथु की सबसे अधिक स्तुति उनके धैर्य तथा करुणा के लिए की जाती है — पृथ्वी के समान सहनशील, उन्हें भी सहते हुए जो उनका अनिष्ट करते हैं। सच्चा बल कठोरता में नहीं बल्कि करुणा में प्रकट होता है (श्लोक 7)।
3. अधिकार एक पितृत्व है, अधिकारभाव नहीं। वन्दीजन भविष्यवाणी करते हैं कि पृथु अपनी प्रजा की वैसे देखभाल करेगा जैसे पिता अपने बच्चों की, और स्वयं को उनका सेवक मानेगा। सही रूप से धारित शक्ति प्रेम तथा सेवा का एक रूप है, स्वामित्व का नहीं (श्लोक 9-18)।
4. धर्ममय शक्ति के पीछे स्वयं भगवान् खड़े हैं। पृथु की स्तुति भगवान् के अवतार के रूप में की जाती है, परम के अंश से सम्पन्न। एक नेता में समस्त सच्ची भलाई, मूल में, स्वयं भगवान् की भलाई है जो उसके माध्यम से कार्य करती है (श्लोक 19)।
5. महानता विनम्र हाथों में सबसे सुरक्षित है। सभा की सबसे महान् आकृति सबसे ऊँची स्तुति उससे ऊपर उठे बिना ग्रहण करती है। विनम्रता वह भूमि है जो महानता को अभिमान में बदलने से रोकती है (श्लोक 20-27)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय हमें स्तुति को कैसे ग्रहण करें, इसका एक कोमल पाठ देता है — जो इसलिए और भी उल्लेखनीय है कि इसका आदर्श स्वयं भगवान् का अवतार प्रस्तुत करता है। पृथु की स्तुति कल्पनीय उच्चतम शब्दों में की जाती है: समस्त धर्म के धारक के रूप में, करुणामय पृथ्वी-सम रक्षक के रूप में, अपनी शक्ति के अंश में स्वयं भगवान् के रूप में। और वह इस सबको शान्त विनम्रता से खड़े होकर ग्रहण करता है, गीत में फूलने के बजाय गायकों का सम्मान करते हुए। कुछ अध्याय पूर्व की वेन की कथा के पास रखने पर — वह राजा जिसने पूजा जाने की माँग की — यह विषमता जानबूझकर तथा खोजपूर्ण है। दोनों राजा थे; दोनों स्तुत हुए या स्तुति खोजी; किन्तु एक ने महिमा को पकड़ा और उससे नष्ट हुआ, जबकि दूसरे ने महिमा को अपने से होकर उसके सच्चे स्रोत की ओर जाने दिया। यही अभिमान तथा विनम्रता के बीच का सम्पूर्ण अन्तर है: यह नहीं कि हम स्तुत होते हैं या नहीं, बल्कि यह कि हम स्तुति का क्या करते हैं। क्या हम उसे रखते हैं, उस पर पलते हैं, जैसे वेन ने किया — या हम उसे अपने से होकर भगवान् तक बहने देते हैं, जैसे पृथु ने किया? अध्याय संकेत देता है कि महानता स्वयं में खतरनाक नहीं; वह तभी खतरनाक बनती है जब वह कृतज्ञ होना भूल जाती है। सम्मानित होकर भी विनम्र रहना, प्रत्येक उपहार को धरोहर तथा प्रत्येक स्तुति को आह्वान के रूप में धारण करना — यही वह शान्त निपुणता है जो सम्राट् हमें सिखाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, स्तुति को अपने से होकर बहने देना सीखें। जब कोई आपको धन्यवाद दे या आपकी प्रशंसा करे — आपके कार्य, आपकी दया, आपकी सहायता के लिए — तो उसे पृथु की भाँति ग्रहण करने का अभ्यास करें: उसे सादर स्वीकार करें, दाता का सम्मान करें, किन्तु उसे अपनी महिमा के लिए न रखें। चुपचाप, भीतर, उसे इन शब्दों के साथ आगे बढ़ाएँ — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, श्रेय उन भगवान् को अर्पित करते हुए जिनसे आपकी प्रत्येक योग्यता प्रवाहित होती है। और आदर्श शासक के वन्दीजनों के चित्र को अपने उत्तरदायित्व के छोटे क्षेत्र के लिए एक

दर्पण के रूप में लें — अपना परिवार, अपना कार्य, अपना समुदाय: क्या आप उनके प्रति धैर्यवान् हैं जो आपका अनिष्ट करते हैं, पीड़ितों के प्रति करुणामय, जो आपको नेतृत्व के लिए दिया गया उसके स्वामी के बजाय सेवक? स्तुति को विनम्रता से ग्रहण करने तथा उत्तरदायित्व को सेवा के रूप में धारण करने में, आप उस सम्राट् का अनुसरण करते हैं जो अपनी ही महिमा के नीचे विनम्र रहा।

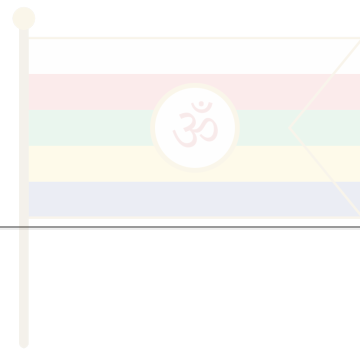
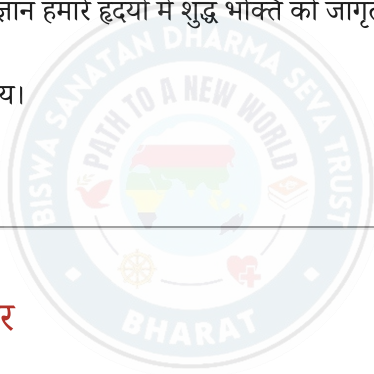
उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का षोडश अध्याय राजा पृथु की स्तुति में वन्दीजनों का गीत है। सन्तों के आग्रह पर, तथा भविष्य में घटित होने वाली महानता को दिव्य-दृष्टि से देखते हुए, वन्दीजन पहले स्वीकार करते हैं कि वाणी के महानतम स्वामी भी उनका सम्पूर्ण वर्णन न कर सकें, और तत्पश्चात् उनके शासन की स्तुति करते हैं — धर्म के प्रमुख संरक्षक के रूप में, पृथ्वी के समान सहनशील तथा पोषक शासक के रूप में, अपनी प्रजा के कल्याण हेतु समर्पित पिता के रूप में, तथा संसार के कष्ट को हरने अपनी शक्ति के अंश में साक्षात् उपस्थित परमेश्वर के रूप में। वे भविष्यवाणी करते हैं कि, प्रत्येक दिशा को जीतते हुए तथा संसार के कष्टों को उखाड़ते हुए, वह पृथ्वी का सच्चा स्वामी बनेगा, देवों तथा असुरों दोनों द्वारा स्तुत। इस सबके बीच, पृथु विनम्रता से सुनते हैं, अभिमान लेने के बजाय गायकों का सम्मान करते हुए। इस प्रकार अध्याय हमारे लिए एक धर्ममय शासक का सम्पूर्ण आदर्श अंकित करता है, और पृथु में, उस महानता का गहनतर आदर्श दिखाता है जो विनम्र रहती है — उस अभिमान का बिल्कुल विपरीत जिसने वेन को नष्ट किया।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, षोडश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-4-chapter-16-glorification-of-king-prithu-by-the-bards-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

